पांचो आँ ँगलियां में राख दीयो फरको,
खेल न्यारो ही देख्यो छ रघुवर को,
न्यारो ही देख्यो छ रघुवर को,
खेल न्यारो ही देख्यो छ रघुवर को।।

एक जीव चौरासी काया,
वहाँ से आया मीनक बणाया,
कोई भेद न पायो नटवर को,
खेल न्यारो ही देख्यो छ रघुवर को।।

खेल खिलौना की दुनिया बणादी,
राँख लियो वो खुद कन चाबी,
को न रयो रे भरोसो पल भर को,
खेल न्यारो ही देख्यो छ रघुवर को।।

समय सरू की लगाम बणायो,
बड़ा बड़ा पर दाव चलायो,
कोई घाट को राख्यो न कोई घर को,
खेल न्यारो ही देख्यो छ रघुवर को।।

गुण अवगुण यश अपयश सारा,
कर्म गति का खेल है न्यारा,
को न मालुनी खेल चतरंन को

खेल न्यारो ही देख्यो छ रघुवर को।।

पांचो आँ ँगलियां में राख दीयो फरको,
खेल न्यारो ही देख्यो छ रघुवर को,
न्यारो ही देख्यो छ रघुवर को,
खेल न्यारो ही देख्यो छ रघुवर को।।

गायक रामकुमार मालुणी।
प्रेषक महावीर दादौली,
9571693202

Video not Available.

Source: https://www.bharattemples.com/panch-ungliyon-me-rakh-diyo-farko/

Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw